

दादा भगवान प्ररूपित

टकराव टालिए



किसी के भी साथ टकराव हो जाए, वह अपनी अज्ञानता की निशानी है।

दादा भगवान प्ररूपित

टकराव टालिए

संकलन : डॉ. नीरूबहन अमीन

प्रकाशक : श्री अजीत सी. पटेल

महाविदेह फाउन्डेशन

5, ममतापार्क सोसायटी, नवगुजरात कॉलेज के पीछे,
उस्मानपुरा, अहमदाबाद - ३८० ०१४, गुजरात.

फोन - (०७९) २७५४०४०८

©

All Rights reserved - Dr. Niruben Amin

Trimandir, Simandhar City,

Ahmedabad-Kalol Highway, Post - Adalaj,

Dist.-Gandhinagar-382421, Gujarat, India.

अब तक प्रिन्ट हुए बारह संस्करण: प्रतियाँ ७२,००० १९९७ से नवम्बर, २०११ तक

तेरहवाँ संस्करण : प्रतियाँ ५,००० फरवरी २०१३

भाव मूल्य : 'परम विनय' और

'मैं कुछ भी जानता नहीं', यह भाव !

द्रव्य मूल्य : ५ रुपये

लेज़र कम्पोज़िंग : दादा भगवान फाउन्डेशन, अहमदाबाद

मुद्रक : महाविदेह फाउन्डेशन

पार्श्वनाथ चैम्बर्स, नये रिज़र्व बैंक के पास,

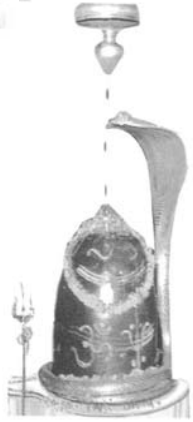
इन्कमटैक्स, अहमदाबाद-३८० ०१४.

फोन : (०७९) २७५४२९६४, २७५४०२१६

- त्रिमंत्र -



नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्जायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच नमुक्कारो,
सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं,



पढमं हवइ मंगलम् ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ३ ॥

जय सच्चिदानंद



‘दादा भगवान’ कौन?

जून १९५८ की एक संध्या का करीब छः बजे का समय, भीड़ से भरा सूरत शहर का रेल्वे स्टेशन, प्लेटफार्म नं. 3 की बेंच पर बैठे श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल रूपी देहमंदिर में कुदरती रूप से, अक्रम रूप में, कई जन्मों से व्यक्त होने के लिए आतुर ‘दादा भगवान’ पूर्ण रूप से प्रकट हुए। और कुदरत ने सर्जित किया अध्यात्म का अद्भुत आश्चर्य। एक घंटे में उन्हें विश्वदर्शन हुआ। ‘मैं कौन? भगवान कौन? जगत् कौन चलाता है? कर्म क्या? मुक्ति क्या?’ इत्यादि जगत् के सारे आध्यात्मिक प्रश्नों के संपूर्ण रहस्य प्रकट हुए। इस तरह कुदरत ने विश्व के सम्मुख एक अद्वितीय पूर्ण दर्शन प्रस्तुत किया और उसके माध्यम बने श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल, गुजरात के चरोतर क्षेत्र के भादरण गाँव के पाटीदार, कॉन्ट्रैक्ट का व्यवसाय करनेवाले, फिर भी पूर्णतया वीतराग पुरुष!

‘व्यापार में धर्म होना चाहिए, धर्म में व्यापार नहीं’, इस सिद्धांत से उन्होंने पूरा जीवन बिताया। जीवन में कभी भी उन्होंने किसीके पास से पैसा नहीं लिया, बल्कि अपनी कमाई से भक्तों को यात्रा करवाते थे।

उन्हें प्राप्ति हुई, उसी प्रकार केवल दो ही घंटों में अन्य मुमुक्षु जनों को भी वे आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाते थे, उनके अद्भुत सिद्ध हुए ज्ञानप्रयोग से। उसे अक्रम मार्ग कहा। अक्रम, अर्थात् बिना क्रम के, और क्रम अर्थात् सीढ़ी दर सीढ़ी, क्रमानुसार ऊपर चढ़ना। अक्रम अर्थात् लिफ्ट मार्ग, शॉर्ट कट।

वे स्वयं प्रत्येक को ‘दादा भगवान कौन?’ का रहस्य बताते हुए कहते थे कि “यह जो आपको दिखते हैं वे दादा भगवान नहीं हैं, वे तो ‘ए.एम.पटेल’ है। हम ज्ञानी पुरुष हैं और भीतर प्रकट हुए हैं, वे ‘दादा भगवान’ हैं। दादा भगवान तो चौदह लोक के नाथ हैं। वे आप में भी हैं, सभी में हैं। आपमें अव्यक्त रूप में रहे हुए हैं और ‘यहाँ’ हमारे भीतर संपूर्ण रूप से व्यक्त हुए हैं। दादा भगवान को मैं भी नमस्कार करता हूँ।”

दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

हिन्दी

- | | |
|---------------------------------------|------------------------------------|
| १. ज्ञानी पुरुष की पहचान | २१. माता-पिता और बच्चों का व्यवहार |
| २. सर्व दुःखों से मुक्ति | २२. समझ से प्राप्त ब्रह्मचर्य |
| ३. कर्म का सिद्धांत | २३. दान |
| ४. आत्मबोध | २४. मानव धर्म |
| ५. मैं कौन हूँ ? | २५. सेवा-परोपकार |
| ६. वर्तमान तीर्थकर श्री सीमंधर स्वामी | २६. मृत्यु समय, पहले और पश्चात |
| ७. भुगते उसी की भूल | २७. निजदोष दर्शन से... निर्दोष |
| ८. एडजस्ट एवरीव्हेयर | २८. पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार |
| ९. टकराव टालिए | २९. क्लेश रहित जीवन |
| १०. हुआ सो न्याय | ३०. गुरु-शिष्य |
| ११. चिंता | ३१. अहिंसा |
| १२. क्रोध | ३२. सत्य-असत्य के रहस्य |
| १३. प्रतिक्रमण | ३३. चमत्कार |
| १४. दादा भगवान कौन ? | ३४. पाप-पुण्य |
| १५. पैसों का व्यवहार | ३५. वाणी, व्यवहार में... |
| १६. अंतःकरण का स्वरूप | ३६. कर्म का विज्ञान |
| १७. जगत कर्ता कौन ? | ३७. आप्तवाणी - १ |
| १८. त्रिमंत्र | ३८. आप्तवाणी - ३ |
| १९. भावना से सुधरे जन्मोंजन्म | ३९. आप्तवाणी - ४ |
| २०. प्रेम | ४०. आप्तवाणी - ५ |
| | ४१. आप्तवाणी - ८ |

★ दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा गुजराती भाषा में भी ५५ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। वेबसाइट www.dadabhagwan.org पर से भी आप ये सभी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं।

★ दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा हर महीने हिन्दी, गुजराती तथा अंग्रेजी भाषा में "दादावाणी" मैगज़ीन प्रकाशित होता है।

संपादकीय

‘टकराव टालो’ यह एक ही सूत्र यदि जीवन में सीधा उतर गया, उसका संसार तो सुंदर हो ही जाएगा, साथ ही मोक्ष भी सीधे सामने चलकर आएगा। यह निर्विवाद वाक्य है!

अक्रम विज्ञानी संपूज्य दादाश्री द्वारा दिए गए इस सूत्र को अपनाकर कितने ही लोग पार उतर गए। उनके जीवन सुख-शांतिमय बने और वे मोक्ष के राही बन गए! इसके लिए हर एक को मात्र दृढ़ निश्चय करना है कि ‘मुझे किसी से टकराव में नहीं आना है। सामनेवाला खूब टकराना चाहे, फिर भी मुझे नहीं टकराना है, कुछ भी करके।’ बस, इतना सा जिसका निश्चय होगा, उसे कुदरती रूप से अपने आप भीतर से ही टकराव टालने की सूझ पड़ने लगेगी!

रात को अंधेरे में कमरे से बाहर निकलना हो और सामने दीवार आ जाए, तब हम क्या करेंगे? दीवार को लात मारकर कहेंगे कि ‘तू बीच में कहाँ से आई? खिसक जा, यह मेरा घर है!’ वहाँ पर तो कैसे सयाने होकर हाथ से दरवाजा टटोलते हुए, ढूँढकर, बाहर निकल जाते हैं। क्यों? क्योंकि वहाँ पर समझ है कि अड़ियलपन करूँगा तो दीवार से सर टकराएगा और फूट जाएगा।

संकरी गली में से राजा जा रहा हो और सामने से दौड़ता हुआ एक साँड आए, तो वहाँ राजा साँड से क्या ऐसा कहेगा कि, ‘दूर हट जा, मेरा राज है, मेरी गली है, मुझे रास्ता दे!’ वहाँ पर तो साँड क्या कहेगा, ‘तू राजा तो मैं महाराजा! आ जा!’ अर्थात् वहाँ बड़े से बड़े, राजा के राजा को भी धीरे से खिसक जाना पड़ेगा और चबूतरे पर चढ़ जाना पड़ेगा। क्यों? टकराव टालने के लिए!

इस साधारण सी बात से इतना ही समझकर तय करना है कि जो भी हमसे टकराने आए, वे दीवार और साँड जैसे ही हैं। इसलिए यदि हमें टकराव टालना हो तो समझदारी दिखाकर हट जाना। जहाँ कहीं भी टकराव सामने आए तो उसे टालना। ऐसा करने से जीवन क्लेशरहित होगा और मोक्ष प्राप्त होगा।

डॉ. नीरूबहन अमीन के जय सच्चिदानंद ।

टकराव टालो

मत आओ टकराव में

‘किसी के साथ टकराव में मत आना और टकराव टालना।’ हमारे इस वाक्य का यदि आराधन करोगे तो ठेठ मोक्ष तक पहुँचोगे। तुम्हारी भक्ति और हमारा वचनबल सारा काम कर देगा। आपकी तैयारी चाहिए। हमारे एक ही वाक्य का यदि कोई पालन करे तो वह मोक्ष में ही जाएगा। अरे, हमारा एक ही शब्द, ज्यों का त्यों, पूरा का पूरा गले उतार ले, तो भी मोक्ष हाथ में आ जाए, ऐसा है। लेकिन उसे ‘ज्यों का त्यों’ गले उतार लेना।

हमारे एक शब्द का यदि एक दिन भी पालन करे तो गजब की शक्ति उत्पन्न होगी! भीतर इतनी सारी शक्तियाँ हैं कि कोई कैसे भी टकराव करने आए, फिर भी उसे टाल सकें। जो जान-बूझकर खाई में गिरने की तैयारी में हैं, उनके साथ टकराने के लिए बैठे रहना है? वह तो कभी भी मोक्ष में नहीं जाएगा, ऊपर से तुम्हें भी अपने साथ बिठाए रखेगा। यह कैसे पुसाएगा? यदि तुम्हें मोक्ष में ही जाना हो तो ऐसों के सामने ज्यादा अक्रलमंदी मत करना। सभी ओर से, चारों दिशाओं से सँभालना, वर्ना यदि तुम्हें इस जंजाल से छूटना होगा तो भी जगत् छूटने नहीं देगा। इसलिए घर्षण किए बगैर ‘स्मूदली’ (सरलता से) बाहर निकल जाना है। अरे, हम तो यहाँ तक कहते हैं कि यदि तेरी धोती झाड़ी में फँस गई हो और तेरी मोक्ष की गाड़ी छूटनेवाली हो तो धोती छुड़ाने मत बैठे रहना ! धोती छोड़कर भाग निकलना। अरे, एक पल भी किसी अवस्था में बैठे रहने जैसा नहीं है। तब फिर बाकी सब की तो बात ही क्या करनी? जहाँ तुम चिपके, वहाँ तुम अपने ‘स्वरूप’ को भूले।

यदि भूल से भी तुम किसी के टकराव में आ गए तो उसका समाधान

कर लेना। सहजता से, उस टकराव में से घर्षण की चिंगारियाँ उड़ाए बिना निकल जाना।

ट्रैफिक के लॉ से टले टकराव

जिस तरह हम रास्ते पर सँभलकर चलते हैं न! फिर सामनेवाला आदमी भले ही कितना भी बुरा हो और हम से टकरा जाए और नुकसान करे, वह अलग बात है। लेकिन अपना इरादा नुकसान पहुँचाने का नहीं होना चाहिए। हम उसे नुकसान पहुँचाने जाएँ, तो इसमें अपने को नुकसान होनेवाला है। प्रत्येक टकराव में हमेशा दोनों को नुकसान होता है। आप सामनेवाले को दुःख पहुँचाओ तो साथ साथ, वैसे ही, उसी क्षण आपको भी दुःख पहुँचे बगैर रहेगा ही नहीं। यह टकराव है। इसलिए मैंने यह उदाहरण दिया है कि मार्ग पर ट्रैफिक का धर्म क्या है, कि टकराओगे तो आप मर जाओगे, टकराने में जोखिम है। इसलिए किसी के साथ टकराना नहीं। इसी प्रकार व्यवहारिक कार्यों में भी टकराना नहीं। टकराने में हमेशा जोखिम ही है। और टकराव तो कभी कभी ही होता है। क्या महीने में दो सौ बार टकराव होता है? महीने में कितनी बार ऐसा होता होगा?

प्रश्नकर्ता : कभी कभीर! दो-चार बार!

दादाश्री : हाँ, तो उतना हमें सुधार लेना है! मेरा क्या कहना है कि, किसलिए हम बिगाड़ें? किसी भी प्रसंग को बिगाड़ना हमें शोभा नहीं देता। ये सारे ट्रैफिक के लॉज के आधार पर चलते हैं, वहाँ खुद की समझ से कोई नहीं चलता न? लेकिन इसमें अपनी समझ से ही चलते हैं। कोई कानून नहीं? उसमें (ट्रैफिक में) कभी भी अड़चन नहीं आती, वह कैसा सुंदर ट्रैफिक का प्रबंध है! अब इन नियमों को यदि आप समझकर चलो तो फिर से कोई अड़चन नहीं आएगी। अर्थात् इन नियमों को समझने में भूल है। नियम समझानेवाला समझदार होना चाहिए।

इन ट्रैफिक के नियमों का पालन करने का आपने निश्चय किया होता है तो कैसा सुंदर पालन होता है! उसमें क्यों अहंकार जागृत नहीं होता कि वे

भले ही कुछ भी कहें लेकिन हम तो ऐसा ही करेंगे। क्योंकि उन ट्रैफिक के नियमों को वह खुद ही अपनी बुद्धि से इतना अधिक समझ सकता है, स्थूल हैं इसलिए, कि हाथ कट जाएगा, तुरंत मर जाऊँगा। उसी प्रकार टकराव करने पर इसमें मर जाऊँगा, यह मालूम नहीं है। इसमें बुद्धि नहीं पहुँच सकती। यह सूक्ष्म बात है। इसके सभी नुकसान सूक्ष्म होते हैं।

प्रथम बार प्रकाशमान हुआ यह सूत्र

सन १९५१ में एक भाई को यह एक सूत्र दिया था। मुझसे वह संसार पार करने का रास्ता पूछ रहा था। मैंने उसे 'टकराव टाल' कहा था और इस तरह उसे समझाया था।

वह तो ऐसा हुआ था कि मैं शास्त्र पढ़ रहा था, तब उसने आकर मुझसे कहा कि, 'दादाजी, मुझे कुछ ज्ञान दीजिए।' वह मेरे यहाँ नौकरी करता था। तब मैंने उससे कहा, 'तुझे क्या ज्ञान दूँ? तू तो सारी दुनिया के साथ लड़-झगड़कर आता है, मार-पीट करके आता है।' रेल्वे में भी गड़बड़, मारामारी करता है, वैसे तो पानी की तरह पैसे बहाता है, लेकिन रेलवे में जो नियमानुसार पैसा भरना पड़ता है, वह नहीं भरता था और ऊपर से झगड़े करता था, यह सब मैं जानता था। इसलिए मैंने उससे कहा कि, 'तुझे सिखाकर क्या करना है? तू तो सब के साथ टकराता है!' तब मुझसे कहता है कि, 'दादाजी, यह ज्ञान जो आप सभी को सिखाते हैं, वह मुझे कुछ तो सिखाइए।' मैंने कहा, 'तुझे सिखाकर क्या करना है? तू तो रोज़ गाड़ी में मारपीट, गड़बड़ करके आता है।' सरकार में दस रुपये भरने जैसा सामान हो, फिर भी पैसे भरे बिना लाता है और यों लोगों को बीस रुपये के चाय-पानी पिला देता है, तो वे खुश-खुश हो जाते हैं! यानी दस बचते नहीं, उल्टे दस का ज़्यादा खर्च हो जाता, ऐसा नोबल (!) आदमी।

उसने फिर मुझे कहा कि, 'आप मुझे कुछ ज्ञान सिखाइए।' मैंने कहा, 'तू तो हररोज़ लड़-झगड़कर आता है। मुझे तो सुनना पड़ता है।' उसने मुझसे कहा, 'फिर भी दादा, मुझे कुछ तो ज्ञान दीजिए।' तब मैंने कहा, 'एक

वाक्य देता हूँ, यदि पालन करे तो।' तब कहने लगा, 'अवश्य पालन करूँगा।' मैंने कहा, 'किसी के भी साथ टकराव में मत आना।' तब उसने पूछा, 'दादाजी, टकराव यानी क्या? मुझे समझाइए दादाजी।' मैंने कहा कि, 'हम सीधे जा रहे हों और बीच में खंभा आए तो हम हटकर जाएँगे या खंभे से टकराएँगे?' तब उसने कहा, 'नहीं, टकराने से तो सिर फूट जाएगा।' मैंने पूछा, 'यहाँ सामने से भैंस आ रही हो, तो तू ऐसे घूमकर जाएगा या उससे टकराकर जाएगा?' तब कहा, 'टकराकर जाऊँगा तो मुझे मारेगी, इसलिए ऐसे घूमकर जाना पड़ेगा।' फिर पूछा, 'साँप आ रहा हो तो? बड़ा पत्थर पड़ा हो तो?' तब कहा, 'वहाँ से भी घूमकर ही जाना पड़ेगा।' मैंने पूछा, 'किसे घूमना पड़ेगा?' तब कहा, 'हमें घूमना पड़ेगा।' मैंने पूछा, 'क्यों?' तब बताया, 'अपने सुख के खातिर। हम टकराएँगे तो हमें लगेगी!' मैंने कहा, 'इस दुनिया में कुछ लोग पत्थर जैसे हैं, कुछ लोग भैंस के जैसे हैं, कुछ गाय के जैसे हैं, कुछ मनुष्य जैसे हैं, कुछ साँप जैसे हैं और कुछ खंभे के जैसे हैं। हर तरह के लोग हैं। उनके साथ अब तू टकराव में नहीं आए, और ऐसा रास्ता निकाल लेना।'

यह समझ उसे १९५१ में दी थी और आज तक उसके पालन में उसने कोई भी कसर नहीं छोड़ी। उसके बाद वह किसी के टकराव में आया ही नहीं। एक सेठ, जो उसके चाचा होते थे, वे जान गए कि यह टकराव में नहीं आता है। इसलिए वे उसे जान-बूझकर बार-बार उकसाते रहते थे! वे उसे कितना भी उकसाने की कोशिश करते फिर भी वह बच निकलता था। किसी के भी टकराव में आया ही नहीं १९५१ के बाद।

व्यवहार में टालो टकराव ऐसे

आप गाड़ी में से उतरे और तुरंत कुलियों को बुलाया, 'एय... इधर आ, इधर आ !' वे दो-चार दौड़कर आते हैं। 'चल, उठा ले।' सामान उठाने के बाद, बाहर निकलकर शोर मचाओ, क्लेश करो कि 'स्टेशनमास्टर को बुलाता हूँ। इतने पैसे लिए जाते होंगे? ऐसा है, वैसा है।' अरे, यहाँ पर मत टकराना। वह पच्चीस रुपये कहे तो उसे पटाकर कहना कि 'भैया,

वास्तव में दस रुपये होते हैं, लेकिन तू बीस ले, चल।' हम जानते हैं कि फँस गए हैं, इसलिए कम-ज्यादा देकर निबटारा कर लेना है। वहाँ टकराव नहीं करना चाहिए, वरना वह बहुत चिढ़ जाएगा न, वह घर से ही चिढ़कर ही आया होता है, उस पर स्टेशन पर झिंकझिंक करेंगे तो ये तो भैंसे जैसा हैं, अभी चाकू मार देगा। तैंतीस मार्क्स पर मनुष्य बना, बत्तीस मार्क्स पर भैंसा बनता है।

यदि कोई आदमी लड़ने आए और शब्द बम के गोले जैसे आ रहे हों, तब आपको समझ लेना चाहिए कि टकराव टालना है। आपके मन पर बिल्कुल असर न हो, फिर भी कदाचित अचानक कोई असर हो जाए, तब समझना चाहिए कि सामनेवाले के मन का असर हम पर पड़ा है। तब हमें खिसक जाना चाहिए। यह सब टकराव है। इसे जैसे-जैसे समझते जाओगे, वैसे-वैसे टकराव टलते जाएँगे। टकराव टालने से मोक्ष होता है।

यह जगत् टकराव ही है, स्पंदन स्वरूप है। इसलिए टकराव टालो। टकराव से यह जगत् निर्मित हुआ है। उसे भगवान ने, 'बैर से बना है,' ऐसा कहा है। हर एक मनुष्य, अरे, जीवमात्र बैर रखता है। हृद से ज्यादा हुआ तो बैर रखे बगैर रहेगा नहीं। फिर चाहे वह साँप हो, बिच्छू हो, बैल हो, भैंसा हो या चाहे जो हो, लेकिन बैर रखेगा। क्योंकि सभी में आत्मा है। आत्मशक्ति सभी में एक समान है। कारण यह है कि, इस पुद्गल (शरीर) की कमजोरी को लेकर सहन करना पड़ता है, लेकिन सहन करने के साथ वह बैर रखे बगैर रहता नहीं है। और अगले जन्म में वह उसका बैर वसूल करता है वापस।

कोई मनुष्य बहुत बोले, तो उसके कैसे भी बोल से हमें टकराव नहीं होना चाहिए। यही धर्म है। हाँ, बोल कैसे भी हों। बोल की क्या ऐसी शर्त होती है कि 'टकराव ही करना है'। ये तो सुबह तक टकराव करें ऐसे लोग हैं। और अपनी वजह से सामनेवाले को अड़चन हो, ऐसा बोलना बड़े से बड़ा गुनाह है। बल्कि किसी ने ऐसा बोला हो फिर भी उसे टाल दे, वही मनुष्य कहलाएगा!

सहन? नहीं, सोल्यूशन लाओ

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने जो टकराव टालने को कहा, इसका अर्थ 'सहन करना' ऐसा होता है न?

दादाश्री : टकराव टालना यानी सहन करना नहीं है। सहन करोगे तो कितना करोगे? सहन करना और 'स्प्रिंग' दबाना, वे दोनों एक से हैं। 'स्प्रिंग दबाई हुई कितने दिन रहेगी?' इसलिए सहन करना तो सीखना ही नहीं। सोल्यूशन लाना सीखो। अज्ञान दशा में तो सहन ही करना होता है। बाद में एक दिन 'स्प्रिंग' उछलती है, वह सब बिखेर देती है, लेकिन यह तो कुदरत का नियम ही ऐसा है।

दुनिया में किसी के कारण हमें सहन करना पड़े, ऐसा कानून ही नहीं है। किसी के कारण यदि हमें सहन करना पड़े, वह अपना ही हिसाब होता है। लेकिन आपको पता नहीं चलता कि यह किस बहीखाते का और कहाँ का माल है, इसलिए हम ऐसा मानते हैं कि इसने नया माल देना शुरू किया है। नया माल कोई देता ही नहीं, दिया हुआ ही वापस आता है। हमारे ज्ञान में सहन करने का होता ही नहीं। ज्ञान से समझ लेना कि सामनेवाला 'शुद्धात्मा' है। यह जो आया, वह मेरे ही कर्म के उदय से आया है, सामनेवाला तो निमित्त है। फिर अपने लिए यह 'ज्ञान' इटसेल्फ ही पज़ल सॉल्व कर देगा।

प्रश्नकर्ता : इसका अर्थ यह हुआ, कि मन में समाधान कर लें कि यह माल था, वही वापस आया है?

दादाश्री : वह खुद शुद्धात्मा है और यह उसकी प्रकृति है। प्रकृति यह फल देती है। आप शुद्धात्मा हैं, वह भी शुद्धात्मा है। अब दोनों आमने-सामने सब हिसाब चुका रहे हैं। इसमें इस प्रकृति के कर्म के उदय से वह कुछ देता है। इसलिए हमने कहा कि यह अपने कर्म का उदय है और सामनेवाला निमित्त मात्र है, वह लौटा गया इसलिए आपका हिसाब चुक गया। जहाँ यह 'सोल्यूशन' हो, वहाँ फिर सहन करने का रहता ही नहीं न!

ऐसा स्पष्टीकरण नहीं करोगे, तो सहन करने से क्या होगा? एक दिन वह 'स्प्रिंग' छटकती थी। 'स्प्रिंग' छटकते देखी है आपने? मेरी 'स्प्रिंग' बहुत छटकती थी। कई दिनों तक मैं बहुत सहन कर लेता था और फिर एक दिन छटकते ही सबकुछ अस्त-व्यस्त कर देता था। यह सब अज्ञान दशा में था, मुझे उसका ख्याल है, वह मेरे लक्ष्य में है। इसीलिए तो मैं कहता हूँ न कि सहन करना तो सीखना ही मत। वह तो अज्ञान दशा में सहन करना होता है। यहाँ तो हमें स्पष्ट समझ लेना है कि इसका परिणाम क्या? इसका कारण क्या? हिसाब में ठीक से देख लेना। कोई चीज हिसाब के बाहर की नहीं होती।

टकराए, अपनी ही भूल से

इस दुनिया में जो कोई भी टकराव होता है, वह आपकी ही भूल है, सामनेवाले की भूल नहीं है! सामनेवाले तो टकरानेवाले हैं ही। 'आप क्यों टकराए?' तब कहें, 'सामनेवाला टकराया इसलिए!' तो आप भी अंधे और वह भी अंधा हो गया।

प्रश्नकर्ता : टकराव में टकराव करें तो क्या होता है?

दादाश्री : सिर फूट जाएगा! तब यदि टकराव हो जाए, तब हमें क्या समझना है?

प्रश्नकर्ता : अपनी ही गलती है।

दादाश्री : हाँ, और उसे तुरंत एक्सेप्ट कर लेना। टकराव हुआ तो आपको समझना चाहिए कि 'ऐसा मैंने क्या कह दिया कि यह टकराव हो गया?' खुद की भूल मालूम हो जाएगी तो हल आ जाएगा। फिर पज़ल सॉल्व हो जाएगी। वर्ना जहाँ तक हम 'सामनेवाले की भूल है' ऐसा खोजने जाएँगे तो कभी भी यह पज़ल सॉल्व नहीं होगा। 'अपनी ही भूल है' ऐसा मानोगे तभी इस संसार का अंत आएगा। अन्य कोई उपाय नहीं है। अन्य सभी उपाय उलझानेवाले हैं और उपाय करना, वह अपने अंदर का छुपा हुआ अहंकार है। उपाय किसलिए खोजते हो? सामनेवाला आपकी गलती निकाले तो आपको ऐसा कहना है कि 'मैं तो पहले से ही टेढ़ा हूँ।'

बुद्धि ही संसार में टकराव करवाती है। अरे, एक औरत का सुनकर चले तो भी पतन होता है, टकराव हो जाता है, फिर यह तो बुद्धि बहन! उसकी सुने तो कहाँ से कहाँ फिँक जाए। अरे, रात को दो बजे जगाकर बुद्धि बहन उल्टा दिखाती है। पत्नी तो कुछ ही समय साथ रहती है, लेकिन बुद्धिबहन तो निरंतर साथ ही साथ रहती है। यह बुद्धि तो 'डीथ्रोन' (पदभ्रष्ट) कराए ऐसी है।

यदि आपको मोक्ष में ही जाना हो, तो बुद्धि का बिल्कुल भी नहीं सुनना। बुद्धि तो ऐसी है कि ज्ञानीपुरुष का भी उल्टा दिखाए। अरे, जिनके द्वारा तुझे मोक्ष प्राप्त हो सके, ऐसा है, उन्हीं का उल्टा देखा? इससे तो आपका मोक्ष आप से अनंत जन्म दूर हो जाएगा।

टकराव, वही हमारी अज्ञानता है। किसी के भी साथ टकराव हुआ, तो वह अपनी अज्ञानता की निशानी है। सच-झूठ भगवान देखते ही नहीं। भगवान तो ऐसा देखते हैं कि, 'वह कुछ भी बोला मगर कहीं टकराया तो नहीं न?' तब कहे, 'नहीं।' बस, हमें इतना ही चाहिए। अर्थात् सच-झूठ भगवान के वहाँ होता ही नहीं, वह तो इन लोगों के यहाँ पर है। भगवान के वहाँ तो द्वंद्व ही नहीं होता न!

जो टकराएँ, वे सभी दीवारें

दीवार से टकराए, तब दीवार की भूल या हमारी भूल? दीवार से आप न्याय माँगो कि 'खिसक जा, खिसक जा' कहो तो? और आप कहो कि मैं तो यहीं से जाऊँगा तो?' किसका सिर फूटेगा?

प्रश्नकर्ता : अपना।

दादाश्री : अर्थात् किसे सावधान रहना होगा? उसमें दीवार को क्या? उसमें दोष किसका? जिसे लगा उसका दोष। अर्थात् दीवार जैसा है जगत्।

दीवार से टकराओ, तो दीवार के साथ मतभेद होता है क्या? कभी दीवार से या किवाड़ से आप टकरा गए, तो उस समय किवाड़ के साथ या दीवार के साथ मतभेद होता है?

प्रश्नकर्ता : यह किवाड़ तो निर्जीव वस्तु है न?

दादाश्री : अर्थात् जीवों के लिए ही आप ऐसा मानते हैं कि यह मुझसे टकराया। इस दुनिया में जो टकराती हैं, वे सारी निर्जीव वस्तुएँ होती हैं। जो टकराते हैं, वे जीवंत नहीं होते, जीवंत टकराते नहीं। निर्जीव वस्तु टकराती है। इसलिए आपको उसे दीवार जैसी ही समझ लेना है, अर्थात् दखल नहीं करनी है! और ऐसे थोड़ी देर बाद कहना, 'चलो, चाय पीते हैं।'

यदि एक बच्चा पत्थर मारे और खून निकल आए, तब बच्चे को क्या करोगे? गुस्सा करोगे। और आप जा रहे हों और पहाड़ पर से एक पत्थर गिरा, आपको वह लगा और खून निकला, तब फिर क्या करोगे? गुस्सा करोगे? नहीं। उसका क्या कारण? वह पहाड़ पर से गिरा है। यह पत्थर पहाड़ पर से गिरा, वह किसने किया? और वहाँ वह लड़का पत्थर मारने के बाद पछता रहा हो कि मुझसे यह क्या हो गया!

इसलिए इस दुनिया को समझो। मेरे पास आओगे तो चिंता नहीं होगी, ऐसा आपको कर दूँगा। और संसार में अच्छी तरह रहो और वाइफ के साथ घूमो आराम से। और बेटे-बेटियों की शादी करो आराम से! फिर वाइफ खुश हो जाएगी और कहेगी, 'कहना पड़ेगा, कैसा समझदार बना दिया मेरे पति को!'

अब, वाइफ का किसी पड़ोसन के साथ झगड़ा हो गया हो और उसका दिमाग गरम हो गया हो, तब आप बाहर से आएँ और वह उग्रता से बात करे, तब आप क्या करोगे? आप भी उग्र हो जाओगे? ऐसे संयोग आ जाते हैं, वहाँ पर एडजस्ट होकर हमें चलना चाहिए। आज वह किस संयोग से क्रोधित हुई है, किसके साथ क्रोधित हुई है, क्या मालूम? आप पुरुष हो, मतभेद मत होने देना। वह मतभेद डाले तो मना लेना। मतभेद अर्थात् टकराव!

साइन्स, समझने जैसा

प्रश्नकर्ता : हमें क्लेश नहीं करना हो, लेकिन सामने से आकर झगड़ने लगे, तब क्या करें?

दादाश्री : इस दीवार के साथ लड़े तो कितने समय तक लड़ सकेगा? कभी यदि इस दीवार से सिर टकरा जाए, तो आप उसके साथ क्या करोगे? सिर टकराया, यानी आपकी दीवार से लड़ाई हो गई, अब क्या दीवार को मारोगे? इसी प्रकार ये जो बहुत क्लेश कराते हैं, वे सभी दीवारें हैं! इसमें सामनेवाले को क्या देखना, आपको अपने आप समझ लेना है कि ये दीवारों जैसे हैं, फिर कोई तकलीफ नहीं है।

प्रश्नकर्ता : हम मौन रहें तो सामनेवाले पर उल्टा असर होता है कि 'इन्हीं का दोष है' और वह ज्यादा क्लेश करता है।

दादाश्री : यह तो आपने मान लिया है कि मैं मौन रहा, इसलिए ऐसा हुआ। रात में आदमी उठा और बाथरूम जाते समय अंधेरे में दीवार से टकरा गया, तो वहाँ वह मौन रहा, इसलिए वह टकराई?

मौन रहो या बोलो, उसे स्पर्श ही नहीं करता, कुछ लेना-देना नहीं है। हमारे मौन रहने से सामनेवाले पर असर होता है ऐसा कुछ नहीं है और हमारे बोलने से असर होता है, ऐसा भी कुछ नहीं है। 'ओन्ली साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' हैं। किसी की इतनी भी सत्ता नहीं है। बिल्कुल सत्ताविहीन जगत्, उसमें कोई क्या कर सकता है? यदि इस दीवार के पास सत्ता होती, तो सामनेवाले के पास भी सत्ता होती। आपको इस दीवार को डाँटने की सत्ता है? ऐसा ही सामनेवाले के लिए है। और उसके निमित्त से जो टकराव है, वह तो छोड़ेगा नहीं, उससे बच नहीं सकते। व्यर्थ शोर मचाने का क्या मतलब? जब कि उसके हाथ में सत्ता ही नहीं। इसलिए आप भी दीवार जैसे हो जाओ न! आप बीवी को डाँटते रहते हो, लेकिन उसके अंदर जो भगवान बैठे हैं, वे नोट करते हैं कि यह मुझे डाँटता है। और यदि वह आपको डाँटे, तब आप दीवार जैसे बन जाओ तो आपके भीतर बैठे हुए भगवान आपको 'हेल्प' करेंगे।

अतः यदि हमारी भूल हो, तभी दीवार टकराती है। उसमें दीवार का कसूर नहीं है। तब लोग मुझसे पूछते हैं कि, 'ये सभी लोग क्या दीवार हैं?'

तब मैं कहता हूँ कि, 'हाँ, लोग भी दीवार ही हैं।' यह मैं 'देखकर' कहता हूँ, यह कोई गप्प नहीं है।

किसी के साथ मतभेद होना और दीवार से टकराना, ये दोनों बातें समान हैं। इन दोनों में भेद नहीं है। दीवार से जो टकराता है, वह नहीं दिखने की वजह से टकराता है और मतभेद होता है, वह भी नहीं दिखने की वजह से मतभेद होता है। आगे का उसे दिखता नहीं है, आगे का उसे सोल्युशन नहीं मिलता, इसलिए मतभेद होता है। ये क्रोध-मान-माया-लोभ वगैरह करते हैं, वह नहीं दिखने की वजह से ही करते हैं! तो ऐसे बात को समझना चाहिए न! जिसे लगी उसका दोष न! दीवार का कोई दोष है? तो इस संसार में सभी दीवारें ही हैं। दीवार टकराए, तब आप उसके साथ खरी-खोटी करने नहीं जाते न? कि 'यह मेरा सही है' ऐसे लड़ने की झंझट में आप नहीं पड़ते न? वैसे ही ये सभी दीवार की स्थिति में ही है। उससे सही मनवाने की जरूरत ही नहीं है।

जो टकराते हैं, वे दीवारें ही हैं, ऐसा आप समझ लो। फिर दरवाजा कहाँ है, उसे ढूँढो तो अंधेरे में दरवाजा मिल जाएगा। ऐसे हाथ से टटोलते-टटोलते जाओ तो दरवाजा मिलता है या नहीं मिलता? और वहाँ से फिर निकल जाओ। टकराना नहीं। ऐसा कानून पालना चाहिए कि मुझे किसी के टकराव में नहीं आना है।

ऐसे जीवन जीएँ

यह तो जीवन जीना ही नहीं आता। शादी करना भी नहीं आया था। बड़ी मुश्किल से शादी हुई! बाप होना नहीं आया, और ऐसे ही बाप बन गया। अब, बच्चे खुश हो जाएँ, ऐसा जीवन जीना चाहिए। सवेंरे सभी को तय करना चाहिए कि, 'भाई, आज किसी का आमने-सामने टकराव न हो, ऐसा आप सोच लो' यदि टकराव से फायदा होता हो, तो मुझे वह दिखाओ। क्या फायदा होता है?

प्रश्नकर्ता : दुःख होता है।

दादाश्री : दुःख होता है इतना ही नहीं, इस टकराव से अभी तो दुःख हुआ ही, मगर सारा दिन बिगड़ जाता है और अगले जन्म में फिर मनुष्यपन ही चला जाता है। मनुष्यपन तो कब रहेगा कि, सज्जनता होगी तो मनुष्यपन रहेगा। लेकिन पाशवता हो, बार-बार घूँसे लगाए, बार-बार सींग मारता रहे, फिर वहाँ पर मनुष्यपन आएगा? ! गायें-भैंसें सींग मारती हैं, या मनुष्य मारते हैं?

प्रश्नकर्ता : मनुष्य ज्यादा मारते हैं।

दादाश्री : मनुष्य मारे तो फिर उसे जानवर गति में जाना पड़ेगा। अर्थात् वहाँ पर दो के बदले चार पैर और ऊपर से दुम मिलेगी! वहाँ क्या ऐसा-वैसा है। वहाँ क्या दुःख नहीं है? बहुत दुःख हैं। थोड़ा समझना पड़ेगा। ऐसा कैसे चलेगा?

टकराव, वह अज्ञानता ही है अपनी

प्रश्नकर्ता : जीवन में स्वभाव नहीं मिलते, इससे टकराव होता है न?

दादाश्री : टकराव होता है, उसीका नाम संसार है!

प्रश्नकर्ता : टकराव होने का कारण क्या है?

दादाश्री : अज्ञानता। जब तक किसी के भी साथ मतभेद होता है, तो वह आपकी निर्बलता की निशानी है। लोग गलत नहीं हैं, मतभेद में गलती आपकी है। लोगों की गलती होती ही नहीं है। वह जान-बूझकर भी कर रहा हो, तो हमें वहाँ पर क्षमा माँग लेनी चाहिए कि, “भैया, यह मेरी समझ में नहीं आता है।” बाकी, लोग गलती करते ही नहीं हैं। लोग मतभेद होने दें, ऐसे हैं ही नहीं। जहाँ टकराव हुआ, वहाँ अपनी ही भूल है।

प्रश्नकर्ता : खंभा बीच में हो और टकराव टालना हो, तब हम एक तरफ होकर खिसक जाएँ, लेकिन खंभा खुद आकर हम पर गिरे, तब वहाँ हम क्या करें?

दादाश्री : गिरे, तो खिसक जाना।

प्रश्नकर्ता : कितना भी खिसकने जाएँ फिर भी खंभा हमें लगे बिना रहता नहीं। उदाहरण के तौर पर, अपनी पत्नी ही टकराए।

दादाश्री : टकराए, उस घड़ी आपको क्या करना चाहिए, यह खोज निकालो।

प्रश्नकर्ता : सामनेवाला मनुष्य अपना अपमान करे और हमें अपमान लगे, उसका कारण अपना अहंकार है?

दादाश्री : वास्तव में तो, सामनेवाला जो अपमान करता है, वह अपने अहंकार को पिघला देता है और वह भी 'ड्रामेटिक' अहंकार को, जितना एक्सेस अहंकार हो, वह पिघलता है, उसमें हमारा क्या बिगड़ जानेवाला है? ये कर्म छूटने नहीं देते। हमें तो छोटा बच्चा भी सामने हो, तब भी कहना चाहिए कि, 'अब हमें छुड़वा दे।'

समा लो सब, सागर के समान पेट में

प्रश्नकर्ता : दादा, व्यवहार में व्यू पॉइन्ट के टकराव में, बड़ा छोटे की भूल निकाले, छोटा अपने से छोटे की भूल निकाले, ऐसा क्यों?

दादाश्री : वह तो ऐसा है कि बड़ा छोटे को खा जाता है, बड़ा छोटे की भूल निकालता है, उसके बजाय आप कहो कि मेरी ही भूल है। भूल को स्वीकार कर लो, तब उसका हल निकलता है। 'हम' क्या करते हैं कि दूसरा यदि सहन न कर सके तो 'हम' अपने ऊपर ही ले लेते हैं, दूसरे की गलतियाँ नहीं निकालते। दूसरों को क्यों दोष दें? अपने पास सागर जैसा पेट है! देखो न, बम्बई की सभी गटरों का पानी सागर खुद में समा लेता है न? वैसी ही आप भी पी लो। इससे क्या होगा कि, इन बच्चों पर और सभी लोगों पर प्रभाव पड़ेगा। वे भी सीखेंगे। बच्चे भी समझ जाते हैं कि इनका पेट सागर जैसा है! जितना आए, उतना जमा कर लो। व्यवहार में ऐसा नियम है कि अपमान करनेवाला अपनी शक्ति हमें देकर जाता है। इसलिए अपमान ले लो, हँसते हँसते!

‘न्याय-स्वरूप’, वहाँ हिसाब खुद का

प्रश्नकर्ता : टकराव टालने की, ‘समभाव से निकाल (निपटारा)’ करने की अपनी वृत्ति हो, फिर भी सामनेवाला मनुष्य हमें परेशान करे, अपमान करे, तब हम क्या करें?

दादाश्री : कुछ नहीं। वह आपका हिसाब है। इसलिए उसका ‘समभाव से निकाल’ करना है, आपको ऐसा तय करना चाहिए। आप अपने निश्चय में ही रहना और आप अपने आप पज़ल सोल्व करते रहना !

प्रश्नकर्ता : यह टकराव होता है, वह ‘व्यवस्थित’ के आधार पर ही होता है न?

दादाश्री : हाँ, जो टकराव है, वह ‘व्यवस्थित’ (साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स) के आधार पर है, मगर ऐसा कब कह सकते हैं? टकराव हो जाने के पश्चात। ‘हमें टकराव नहीं करना है’ ऐसा आपका निश्चय होना चाहिए। सामने खंभा दिखे, तब आप समझ लो कि खंभा है, घूमकर जाना होगा, टकराना तो है ही नहीं। लेकिन फिर भी यदि टकराव हो जाए, तब आप कहना कि ‘व्यवस्थित’ है। पहले से ही ‘व्यवस्थित’ है, ऐसा मानकर चलोगे, तब तो ‘व्यवस्थित’ का दुरुपयोग हुआ कहलाएगा।

घर्षण से हनन, शक्तियों का

सारी आत्मशक्ति यदि खत्म होती हो, तो वह घर्षण से। ज़रा भी टकराए तो खत्म। सामनेवाला टकराए, तब हमें संयमपूर्वक रहना चाहिए। टकराव तो होना ही नहीं चाहिए। फिर चाहे यह देह भी जाना हो तो जाए, मगर टकराव में नहीं आना चाहिए। यदि सर्फ घर्षण न हो, तो मनुष्य मोक्ष में चला जाए। किसी ने इतना ही सीख लिया कि ‘मुझे घर्षण में नहीं आना है’, तो फिर उसे गुरु की या किसी की भी ज़रूरत नहीं है। एक या दो जन्मों में सीधे मोक्ष में जाएगा। ‘घर्षण में आना ही नहीं है’ ऐसा यदि

उसकी श्रद्धा में बैठ गया और निश्चय ही कर लिया, तब से ही वह समकित हो गया! अर्थात् यदि किसीको समकित करना हो तो हम गारन्टी देते हैं कि जाओ, घर्षण नहीं करने का निश्चय कर लो, तभी से समकित हो जाएगा। देह का टकराव हुआ हो और चोट लगी हो तो इलाज करने से ठीक हो जाएगा। लेकिन घर्षण और संघर्षण से मन में जो दाग पड़ गए हों, बुद्धि पर दाग पड़े हों, उन्हें कौन निकालेगा? हजारों जन्मों तक भी नहीं जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : घर्षण और संघर्षण से मन और बुद्धि पर घाव पड़ते हैं?

दादाश्री : अरे! मन-बुद्धि पर तो क्या, पूरे अंतःकरण पर घाव पड़ते रहते हैं और उसका असर शरीर पर भी होता है। घर्षण से तो कितनी सारी मुश्किलें हैं।

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं कि घर्षण से सारी शक्तियाँ खत्म हो जाती हैं, तो क्या जागृति से शक्तियाँ वापस खिंचेंगी?

दादाश्री : शक्तियाँ खींचने की ज़रूरत नहीं है। शक्तियाँ तो हैं ही। शक्तियाँ अब उत्पन्न हो रही हैं। पहले जो घर्षण हो चुके थे और उससे जो नुकसान हुआ था, वही वापस आता है। लेकिन अब यदि नया घर्षण पैदा करोगें, तो फिर शक्तियाँ चली जाएँगी। आई हुई शक्ति भी चली जाएगी और यदि खुद घर्षण होने ही न दें, तो शक्ति उत्पन्न होती रहेगी !

इस दुनिया में बैर से घर्षण होता है। संसार का मूल बीज बैर है। जिसके बैर और घर्षण - ये दो बंद हो गए, उसका मोक्ष हो गया। प्रेम बाधक नहीं है, बैर जाए तो प्रेम उत्पन्न हो जाए।

कॉमनसेन्स, एवरीव्हेर एप्लिकेबल

व्यवहार शुद्ध हो, उस के लिए क्या चाहिए? 'कॉमनसेन्स' कम्पलीट (पूर्ण व्यवहारिक समझ) चाहिए। स्थिरता-गंभीरता चाहिए। व्यवहार में 'कॉमनसेन्स' की ज़रूरत है। 'कॉमनसेन्स' अर्थात् 'एवरीव्हेर एप्लिकेबल'

(हर जगह काम आए)। स्वरूपज्ञान के साथ 'कॉमनसेन्स' हो तो बहुत दीपयमान होता है।

प्रश्नकर्ता : 'कॉमनसेन्स' कैसे प्रकट होता है?

दादाश्री : भले ही कोई हम से टकराए पर हम किसी से नहीं टकराएँ, इस तरह रहें तो 'कॉमनसेन्स' उत्पन्न होगा। लेकिन हमें किसी से टकराना नहीं चाहिए, वरना 'कॉमनसेन्स' चला जाएगा! अपनी ओर से घर्षण नहीं होना चाहिए।

सामनेवाले के घर्षण से अपने में 'कॉमनसेन्स' उत्पन्न होता है। आत्मा की यह शक्ति ऐसी है कि घर्षण के समय कैसे बर्ताव करना, उसके सारे उपाय बता देती है और एक बार दिखा दे, तो फिर वह ज्ञान जाएगा नहीं। ऐसा करते करते 'कॉमनसेन्स' बढ़ता जाता है। मेरा किसी से घर्षण नहीं होगा, क्योंकि मेरा 'कॉमनसेन्स' ज़बरदस्त है। इसलिए आप क्या कहना चाहते हैं, वह तुरंत ही मेरी समझ में आ जाता है। लोगों को ऐसा लगे कि यह दादा का अहित कर रहा है, लेकिन मुझे तुरंत समझ में आ जाता है कि यह अहित, अहित नहीं है। सांसारिक अहित नहीं है और धार्मिक अहित भी नहीं है और आत्मा के सम्बन्ध में तो अहित है ही नहीं। लोगों को ऐसा लगता है कि आत्मा का अहित कर रहे हैं, लेकिन हमें उसमें हित समझ में आता है। यानी यह है 'कॉमनसेन्स' का प्रभाव। इसीलिए हमने 'कॉमनसेन्स' का अर्थ लिखा है कि 'एवरीव्हेर एप्लिकेबल'। आज की जनरेशन में 'कॉमनसेन्स' जैसी चीज़ ही नहीं है। जनरेशन टु जनरेशन 'कॉमनसेन्स' कम होता गया है।

अपना (आत्म) विज्ञान प्राप्त होने के पश्चात् मनुष्य इस प्रकार रह सकता है। या फिर आम जनता में कोई एकाध मनुष्य इस प्रकार रह सकता है, ऐसे पुण्यशाली लोग भी होते हैं! लेकिन वे तो कुछ जगहों पर ही रह सकते हैं, हर जगह नहीं रह सकते।

प्रश्नकर्ता : सभी घर्षणों का कारण यही है न कि एक लेयर से दूसरी लेयर का अंतर बहुत ज्यादा है?

दादाश्री : घर्षण तो प्रगति है ! जितना झंझट होगा, घर्षण होगा, उतना ऊपर उठने का मार्ग मिलेगा। घर्षण नहीं होगा तो वहीं के वहीं रहोगे। इसलिए लोग घर्षण खोजते हैं।

घर्षण से प्रगति के पथ पर

प्रश्नकर्ता : घर्षण प्रगति के लिए है, ऐसा समझकर खोजें तो प्रगति होती है?

दादाश्री : लेकिन वे ऐसे समझकर नहीं खोजते। भगवान कहीं ऊपर नहीं उठा रहे हैं, घर्षण ऊपर उठाता है। घर्षण कुछ हद तक ऊपर उठा सकता है, बाद में ज्ञानी मिलें तभी काम होगा। घर्षण तो कुदरती तरीके से होता है, जैसे नदी में पत्थर आपस में टकराकर गोल होते हैं।

प्रश्नकर्ता : घर्षण और संघर्षण में क्या फ़र्क है?

दादाश्री : जिनमें जीव नहीं होता जब वे टकराएँ, तब वह घर्षण कहलाता है और जीववाले टकराएँ, तब संघर्षण होता है।

प्रश्नकर्ता : संघर्ष से आत्मशक्ति रुंध जाती है न?

दादाश्री : हाँ, सही बात है। संघर्ष हो, उसमें हर्ज नहीं है, 'हमें संघर्ष करना है' ऐसा भाव निकाल देने को मैं कहता हूँ। 'आपको' संघर्ष करने का भाव नहीं होना चाहिए, फिर चंदूलाल (यहाँ खुद का नाम समझें) भले ही संघर्ष करे। अपना भाव रुंधे, ऐसा नहीं होना चाहिए।

घर्षण कराए, प्रकृति

प्रश्नकर्ता : घर्षण कौन कराता है? जड़ या चेतन?

दादाश्री : पिछले घर्षण ही फिर से घर्षण करवाते हैं। जड़ या चेतन का इसमें सवाल ही नहीं है। आत्मा इसमें दखल करता ही नहीं। यह सारा घर्षण *पुद्गल* ही कराता है। लेकिन जो पिछले घर्षण हैं, वे फिर से घर्षण करवाते हैं। जिसके पिछले घर्षण पूरे हो चुके हैं, उसे फिर घर्षण

नहीं होते। वर्ना घर्षण पर घर्षण और उसके ऊपर घर्षण, ऐसे बढ़ता ही रहता है।

पुद्गल यानी क्या, कि पूरी तरह से जड़ नहीं है, वह मिश्र चेतन है। यह विभाविक पुद्गल कहलाता है, विभाविक यानी विशेष भाव से परिणाम प्राप्त पुद्गल, वही सब करवाता है। जो शुद्ध पुद्गल है, वह पुद्गल ऐसा नहीं करवाता। यह पुद्गल तो मिश्र चेतन हुआ है। आत्मा का विशेष भाव और जड़ का विशेष भाव, दोनों मिलकर तीसरा रूप बना, प्रकृति स्वरूप बना। वही सब घर्षण करवाता है।

प्रश्नकर्ता : घर्षण न हो, वही सच्चा अहिंसक भाव पैदा हुआ कहलाता है?

दादाश्री : नहीं, ऐसा कुछ नहीं! लेकिन यह दादाजी से जाना कि इस दीवार से घर्षण करने से इतना फायदा(!), तो भगवान के साथ घर्षण करने में कितना फायदा?! इतना जोखिम समझने से ही अपना परिवर्तन होता रहेगा।

अहिंसा तो पूर्ण रूप से समझी जा सके, ऐसी नहीं है और पूर्ण रूप में समझना बहुत कठिन है। इसके बजाय ऐसा पकड़ लिया हो कि 'घर्षण में कभी भी नहीं आना है।' तब फिर क्या होगा कि शक्तियाँ आरक्षित रहा करेंगी और दिन-ब-दिन बढ़ती ही रहेंगी। फिर घर्षण से होनेवाला नुकसान नहीं होगा। कभी घर्षण हो जाए तो घर्षण के बाद आपके प्रतिक्रमण करने पर वह साफ़ हो जाएगा। इसलिए यह समझना चाहिए कि यहाँ पर घर्षण हो जाता है, तो वहाँ प्रतिक्रमण करना चाहिए। वर्ना बहुत जोखिमदारी है। इस ज्ञान से मोक्ष में तो जाओगे, मगर घर्षण के कारण मोक्ष में जाते हुए बाधाएँ बहुत आएँगी और देर लगेगी!

इस दीवार के लिए उल्टे विचार आएँ तो हर्ज नहीं है, क्योंकि एकपक्षीय नुकसान है। जब कि किसी जीवित व्यक्ति को लेकर एक भी उल्टा विचार आया तो जोखिम है। दोनों तरफ से नुकसान होगा। लेकिन हम

उसका प्रतिक्रमण करें तो सारे दोष चले जाएँगे। इसलिए जहाँ-जहाँ घर्षण होते हैं, वहाँ पर प्रतिक्रमण करो, तो घर्षण खत्म हो जाएँगे।

समाधान, सम्यक् ज्ञान से ही

प्रश्नकर्ता : दादाजी, यह अहंकार की बात घर में भी कई बार लागू होती है, संस्था में लागू होती है, दादाजी का काम कर रहे हों, उसमें भी कहीं अहंकार का टकराव हो, वहाँ भी लागू होती है। वहाँ पर भी समाधान चाहिए न?

दादाश्री : हाँ, समाधान चाहिए न! अपने यहाँ 'ज्ञानवाला' समाधान लेता है, लेकिन 'ज्ञान' नहीं हो वहाँ क्या समाधान ले? वहाँ फिर अलगाव होता जाएगा, मन उससे अलग होता जाएगा। अपने यहाँ अलगाव नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी, टकराना नहीं चाहिए न?

दादाश्री : टकराते हैं, वह तो स्वभाव है। ऐसा 'माल' भरकर लाया है, इसलिए ऐसा होता है। यदि ऐसा माल नहीं लाया होता तो ऐसा नहीं होता, अतः हमें समझ लेना चाहिए कि भाई की आदत ही ऐसी है। ऐसा हम समझें। इससे फिर हम पर असर नहीं होगा। क्योंकि आदत आदतवाले की (पूर्वसंचित संस्कारवाले जीव की) और 'हम' अपनेवाले (शुद्धात्मा)! और फिर उसका *निकाल* हो जाता है। आप अटके रहो तो झंझट है। बाकी टकराव तो होता है। टकराव नहीं हो, ऐसा तो होता ही नहीं। पर उस टकराव की वजह से हम एक दूसरे से अलग नहीं हो जाएँ, केवल यही देखना है। वह तो पति-पत्नी में भी होता है। लेकिन वे फिर एक ही रहते हैं न वापस?! वह तो होता है। इसमें किसी पर कोई दबाव नहीं डाला है कि, 'तुम मत टकराना।'

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी, टकराव नहीं हो ऐसा भाव तो निरंतर रहना चाहिए न?

दादाश्री : हाँ, रहना चाहिए। यही करना है न! उसका प्रतिक्रमण

करना है और उसके प्रति भाव रखना है ! फिर से ऐसा हो जाए तो फिर से प्रतिक्रमण करना, क्योंकि एक परत चली जाएगी, फिर दूसरी परत चली जाएगी। ऐसा परतवाला है न? मेरा तो जब टकराव होता था, तब नोट करता था कि आज अच्छा ज्ञान पाया ! टकराने से फिसल नहीं जाते, जागृत ही जागृत रहते हैं न ! वह आत्मा का विटामिन है। अर्थात् इस टकराव में झंझट नहीं है। टकराने के बाद एक दूसरे से अलगाव नहीं होना, वह पुरुषार्थ है। यदि सामनेवाले से हमारा मन जुदा हो रहा हो, तो प्रतिक्रमण करके राह पर ले आना। हम इन सभी के साथ किस प्रकार तालमेल रखते होंगे? आपके साथ भी तालमेल बैठता है या नहीं बैठता? ऐसा है, शब्दों से टकराव पैदा होता है। मुझे बोलना बहुत पड़ता है, फिर भी टकराव नहीं होता न !

टकराव तो होता है। ये बरतन टकराते हैं या नहीं टकराते? *पुद्गल* का स्वभाव है टकराना। लेकिन ऐसा 'माल' भरा होगा, तो नहीं भरा हो तो नहीं। हमारे भी टकराव होते थे लेकिन ज्ञान होने के पश्चात् टकराव नहीं हुए। क्योंकि हमारा ज्ञान अनुभव ज्ञान है और हम इस ज्ञान से सारा *निकाल* करके आए हैं और आपको *निकाल* करना बाकी है।

दोष धुलें प्रतिक्रमण से

किसी से टकराव में आने पर वापस दोष दिखने लगते हैं और टकराव में नहीं आएँ तो दोष ढूँँके रहते हैं। रोज़ के पाँचसौ-पाँचसौ दोष दिखने लगें तो समझना कि पूर्णाहुति नजदीक आ रही है।

इसलिए जहाँ हो वहाँ से टकराव टालना। ये टकराव करके इस लोक का तो बिगाड़ते ही हैं, लेकिन परलोक का भी बिगाड़ते हैं ! जो इस लोक का बिगाड़ते हैं, वे परलोक का बिगाड़े बगैर रहते ही नहीं ! जिसका यह लोक सुधरेगा, उसका परलोक सुधर जाएगा। इस जन्म में यदि किसी तरह की अड़चन नहीं आई हो तो समझना कि परभव में भी अड़चन है ही नहीं। और यहाँ पर अड़चनें खड़ी कीं, तो वे सभी वहाँ आनेवाली ही हैं।

तीन जन्मों की गारन्टी

जिसका टकराव नहीं होगा, उसका तीन जन्मों में मोक्ष होगा, उसकी मैं गारन्टी देता हूँ। टकराव हो जाए, तो प्रतिक्रमण कर लेना। टकराव पुद्गल का है और पुद्गल से पुद्गल का टकराव प्रतिक्रमण से नाश होता है।

सामनेवाला 'भाग' करे तो हमें 'गुणा' करना चाहिए, ताकि रकम उड़ जाए। सामनेवाले व्यक्ति के बारे में यह सोचना कि, 'उसने मुझे ऐसा कहा, वैसा कहा', यही गुनाह है। यहाँ रास्ते में जाते समय पेड़ टकराए तो उससे क्यों नहीं लड़ते? पेड़ को जड़ कैसे कहेंगे? जो टकराते हैं, वे सभी पेड़ ही हैं। गाय का पैर हम पर पड़े, तब हम कुछ कहते हैं? ऐसा ही इन सब लोगों का है। 'ज्ञानीपुरुष' सभी को किस प्रकार क्षमा कर देते हैं? वे समझते हैं कि ये बेचारे समझते नहीं हैं, पेड़ जैसे हैं। और समझदार को तो कहना ही नहीं पड़ता, वह तो भीतर ही भीतर तुरंत प्रतिक्रमण कर लेता है।

जहाँ आसक्ति, वहाँ रिएक्शन ही

प्रश्नकर्ता : लेकिन कई बार हमें द्वेष नहीं करना हो, फिर भी द्वेष हो जाता है, उसका क्या कारण है?

दादाश्री : किसके साथ?

प्रश्नकर्ता : पति के साथ ऐसा हो तो?

दादाश्री : वह द्वेष नहीं कहलाता। जो आसक्ति का प्रेम है, वह सदैव रिएक्शनरी होता है। इसलिए यदि चिढ़ गए तो वह फिर उल्टा चलेंगे। उल्टा चले तो कुछ समय दूर रहेंगे और फिर प्रेम का उफान आएगा। और फिर प्रेम में चोट लगने पर टकराव होगा। तब फिर प्रेम बढ़ता है। जहाँ अत्यधिक प्रेम होता है, वहाँ बखेड़ा होता है। अर्थात् जहाँ भी बखेड़ा होता रहता हो, वहाँ इन लोगों को भीतर से प्रेम होता है। वह प्रेम हो तभी बखेड़ा होता है। पूर्वजन्म का प्रेम हो, तभी बखेड़ा होता है। जरूरत से ज्यादा प्रेम है, वर्ना बखेड़ा होता ही नहीं! इस बखेड़े का स्वरूप ही ऐसा है।

उसे लोग क्या कहते हैं? 'टकराव की वजह से ही हमारा प्रेम है।' तो बात सही भी है वह आसक्ति टकराव की वजह से ही हुई है। जहाँ टकराव कम हो, वहाँ आसक्ति नहीं होती है। जिस घर में स्त्री-पुरुष के बीच टकराव कम है, वहाँ आसक्ति कम है, ऐसा समझ लेना। समझ में आए ऐसी बात है न?

प्रश्नकर्ता : संसार व्यवहार में कभी जो अहम् रहता है, तो उसकी वजह से चिंगारियाँ बहुत निकलती हैं।

दादाश्री : वे अहम् की चिंगारियाँ नहीं है। वे दिखती तो हैं अहम् की चिंगारियाँ, मगर वह 'विषय'(विकार) के अधीन होता है। विषय नहीं होगा, तो यह भी नहीं होगा। विषय बंद हो जाए, उसके बाद वह सारा इतिहास ही बंद हो जाएगा। इसलिए अगर कोई साल भर के लिए ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें, तो उनसे मैं पूछता हूँ। तब वे कहते हैं, 'जीवन में ज़रा भी तकरार नहीं, किच-किच नहीं, खटखट नहीं, कुछ भी नहीं, स्टेन्ड स्टिल!' मैं पूछता हूँ फिर, मैं जानता हूँ कि ऐसा हो जाता है। यानी वह विषय के कारण होता है।

प्रश्नकर्ता : पहले तो हम ऐसा समझते थे कि घर के कामकाज की वजह से टकराव होता होगा। लेकिन घर के काम में हेल्प करने के बावजूद भी टकराव होता है।

दादाश्री : वे सब टकराव होंगे ही। जब तक यह विकारी मामला है, सम्बन्ध हैं, तब तक टकराव होंगे ही। टकराव का मूल ही यह है। जिसने विषय को जीत लिया, उसे कोई नहीं हरा सकता। कोई उसका नाम भी नहीं ले सकता। उसका प्रभाव पड़ता है।

टकराव, स्थूल से लेकर सूक्ष्मतम तक का

प्रश्नकर्ता : अपना वाक्य है कि 'टकराव टालो।' 'इस वाक्य का आराधन करता जाए तो ठेठ मोक्ष में पहुँचाए। उसमें स्थूल टकराव टालना, फिर आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ते-बढ़ते सूक्ष्म टकराव, सूक्ष्मतर टकराव टालो', यह कैसे? वह समझाएँ।

दादाश्री : उसे सूझ पड़ती ही जाती है। जैसे-जैसे आगे बढ़ता जाएगा न तो, किसी को सिखाना नहीं पड़ेगा। अपने आप ही आ जाता है। यह शब्द ही ऐसा है कि वह ठेठ मोक्ष में ले जाए।

दूसरा सूत्र - 'भुगते उसी की भूल', यह भी मोक्ष में ले जाएगा। ये एक-एक शब्द मोक्ष में ले जाएगा। इसकी हमारी गारन्टी है।

प्रश्नकर्ता : वह साँप के, खँभे के उदाहरण दिए वह तो स्थूल टकराव के उदाहरण हैं। फिर सूक्ष्म, सूक्ष्मतर, सूक्ष्मतम के उदाहरण दीजिए। सूक्ष्म टकराव कैसे होता है?

दादाश्री : तेरी फ़ादर के साथ जो होता है, वह सब सूक्ष्म टकराव है।

प्रश्नकर्ता : सूक्ष्म यानी मानसिक? वाणी से होता है, वह भी सूक्ष्म में जाएगा?

दादाश्री : वह स्थूल में। जो सामनेवाले को पता नहीं चले, जो दिखे नहीं, वे सब सूक्ष्म में आते हैं।

प्रश्नकर्ता : वह सूक्ष्म टकराव किस तरह टालें?

दादाश्री : पहले स्थूल, फिर सूक्ष्म, बाद में सूक्ष्मतर और अंत में सूक्ष्मतम टकराव टालने हैं।

प्रश्नकर्ता : सूक्ष्मतर टकराव किसे कहते हैं?

दादाश्री : तुम किसी को मारते हो और ये भाई ज्ञान से देखें कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ, यह 'व्यवस्थित शक्ति' मार रही है', इस प्रकार देखें, लेकिन मन से ज़रा भी दोष देखें तो वह सूक्ष्मतर टकराव है।

प्रश्नकर्ता : फिर से कहिए, ठीक से समझ में नहीं आया।

दादाश्री : यह तुम सभी लोगों के दोष देखते हो न! वह सूक्ष्मतर टकराव है।

प्रश्नकर्ता : यानी दूसरों के दोष देखना, वह सूक्ष्मतर टकराव है?

दादाश्री : ऐसा नहीं, खुद ने तय किया हो कि दूसरों के दोष हैं ही नहीं और फिर भी दोष दिखें, वह सूक्ष्मतर टकराव है। क्योंकि वह शुद्धात्मा है और दोष अलग हैं।

प्रश्नकर्ता : तो उसे ही मानसिक टकराव कहा है?

दादाश्री : वह मानसिक तो सब सूक्ष्म में गया।

प्रश्नकर्ता : तो इन दोनों के बीच फ़र्क़ कहाँ पड़ता है?

दादाश्री : यह तो मन से भी ऊपर की बात है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् यह सूक्ष्मतर टकराव है, उस समय सूक्ष्म टकराव भी साथ होगा न?

दादाश्री : यह हमें नहीं देखना! सूक्ष्म अलग होता है और सूक्ष्मतर अलग होता है। सूक्ष्मतम तो आखिरी बात है।

प्रश्नकर्ता : एक बार सत्संग में ही ऐसी बात की थी कि चन्दूलाल के साथ तन्मयाकार होना, वह सूक्ष्मतम टकराव कहलाता हैं।

दादाश्री : हाँ, सूक्ष्मतम टकराव! उसे टालना। भूल से तन्मयाकार हुआ न, फिर बाद में पता चलता है न कि, यह भूल हो गई।

प्रश्नकर्ता : तब उस टकराव को टालने का उपाय केवल प्रतिक्रमण ही है या कुछ और भी है?

दादाश्री : दूसरा कोई हथियार है ही नहीं। ये हमारी नौ कलमें, वे भी प्रतिक्रमण ही हैं। अन्य कोई हथियार नहीं है। इस दुनिया में प्रतिक्रमण के सिवा और कोई साधन नहीं है। वह उच्चतम साधन है। क्योंकि संसार अतिक्रमण से खड़ा हुआ है।

प्रश्नकर्ता : यह तो कितना विस्मयकारक है! 'हुआ सो न्याय',

‘भुगते उसी की भूल’, ये जो वाक्य हैं, वे एक-एक अद्भुत वाक्य हैं। और दादाजी की साक्षी में प्रतिक्रमण करते हैं न, तो उनके स्पंदन पहुँचते ही हैं।

दादाश्री : हाँ, सही है। स्पंदन तुरंत ही पहुँच जाते हैं और उनके परिणाम आते हैं। हमें भरोसा होता है कि यह असर हुआ लगता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी, प्रतिक्रमण तो इतनी तेज़ी से हो जाते हैं, उसी क्षण! यह तो ग़ज़ब है, दादाजी !! यह दादाजी की कृपा ग़ज़ब की है !!!

दादाश्री : हाँ, यह ग़ज़ब है। साइन्टिफिक चीज़ है।

- जय सच्चिदानंद

प्राप्तिस्थान

दादा भगवान परिवार

- अडालज :** त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद- कलोल हाईवे,
पोस्ट : अडालज, जि.-गांधीनगर, गुजरात - 382421.
फोन : (079) 39830100, ०००००० : ००००@००००००००००.०००
- अहमदाबाद :** दादा दर्शन, ५, ममतापार्क सोसाइटी, नवगुजरात कॉलेज के पीछे
उस्मानपुरा, अहमदाबाद-380014. फोन : (079) 27540408
- राजकोट :** त्रिमंदिर, अहमदाबाद-राजकोट हाईवे, तरघड़िया चोकड़ी (सर्कल),
पोस्ट : मालियासण, जि.-राजकोट. फोन : 9274111393
- भुज :** त्रिमंदिर, हिल गार्डन के पीछे, एयरपोर्ट रोड. फोन : (02832) 290123
- गोधरा :** त्रिमंदिर, भामैया गाँव, एफसीआई गोडाउन के सामने, गोधरा
(जि.-पंचमहाल). फोन : (02672) 262300
- वडोदरा :** दादा मंदिर, १७, मामा की पोल-मुहल्ला, रावपुरा पुलिस स्टेशन के
सामने, सलाटवाड़ा, वडोदरा. फोन : (0265) 2414142

मुंबई	: 9323528901	दिल्ली	: 9310022350
कोलकता	: 033-32933885	चेन्नई	: 9380159957
जयपुर	: 9351408285	भोपाल	: 9425024405
इन्दौर	: 9893545351	जबलपुर	: 9425160428
रायपुर	: 9425245616	भिलाई	: 9827481336
पटना	: 9431015601	अमरावती	: 9823127601
बेंगलूर	: 9590979099	हैदराबाद	: 9989877786
पूना	: 9860797920	जलंधर	: 9463542571

०.०.०. : ०००० ००००००० ०००००० ००००००००० :

100, ०० ०००००० ००००, ००००००, ०००००० 66606

०००. : +1 877०505 ०००० (3232)

००००० : ००००@००.०००००००००००.०००

०.०. : +44 330 111 ०००० (3232) ० ० ० : +971 557316937

०००००० : +254 722 722 063 ०००००००००० : +65 81129229

००००००००० : +61 421127947 ० ० : +64 21 0376434

Website : www.dadabhagwan.org



टकराव टालिए

जिस तरह हम रास्ते पर सँभलकर चलते हैं न! फिर सामनेवाला आदमी भले ही कितना भी बुरा हो और हमें टक्कर लगा दे और नुकसान पहुँचाए, वह अलग बात है, लेकिन अपना इरादा नुकसान पहुँचाने का नहीं होना चाहिए। हम उसे नुकसान पहुँचाने जाएँ, तो इसमें अपने को नुकसान होनेवाला है। इसलिए किसी भी टकराव में हमेशा दोनों को ही नुकसान होता है। आप सामनेवाले को दुःख पहुँचाओ तो उसके साथ ही, उसी क्षण आपको भी दुःख पहुँचे बगैर रहेगा ही नहीं। यह टकराव है।

इसलिए मैंने यह उदाहरण दिया है कि मार्ग पर ट्रैफिक धर्म क्या है कि टकराओगे तो आप मर जाओगे, टकराने में जोखिम है। इसलिए किसी के साथ टकराना मत। इसी प्रकार व्यवहारिक कार्यों में भी मत टकराना। टकराव टालिए।

-दादाश्री

